योगवाणी

वर्ष ५०, अक्टूबर २०२५

योगवाणी

वर्ष ५०, अक्टूबर, २०२५

आर.एन.आई. २९०७५/७६

"मानव जीवन में योग की साधना की परम उपयोगिता सहज सिद्ध है। योग ही एक ऐसा निरपेक्ष साधन मार्ग है जिसके आश्रय में सर्व सामान्य को जीवन की व्यवहारिकता और सच्चिदानन्द स्वरूप का ज्ञान सुलभ होता है"

राष्ट्रसन्त महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज

वार्षिक सदस्यता : १२५/-
द्विवार्षिक सदस्यता : २५०/-
पंचवार्षिक सदस्यता : ६००/-
आजीवन सदस्यता : १२००/-
एक प्रति का मूल्य : १५/-

मुद्रक:
मोती पेपर कनवर्टर्स
डी-4/1, सेक्टर 13
गीडा, गोरखपुर
दूरभाष : 0551-2580093

विषयानुक्रम

	पृष्ठ
जीवनामृत	
श्रीशिवगोरक्षस्तुतिः	०२
योगामृत	०३
गोरखवाणी	०४
राशियों का मासफल	०५
नाथपन्थ एवं दर्शन	
गोरखपुर अतीत से वर्तमान तक – योगी आदित्यनाथ	०७
नाथपन्थ एक परिचय – डॉ. हर्षवर्धन सिंह	१२
धर्म, संस्कृति एवं अध्यात्म	
आध्यात्मिक शक्ति संचय एवं अंत:करण शुद्धि का महापर्व है नवरात्र – डॉ. अभिषेक कुमार उपाध्याय	२१
संस्कृत साहित्य में पशुओं का महत्व – अनुपम वत्स	२६
पर्व विशेष	
मानसी दीपमाला – डॉ. प्रांगेश मिश्र	२८
चतुर्थ आवरण	
तुलसी – एक घरेलू औषधि – डॉ. विजय कुमार पाठक	

॥ ॐ नमो भगवते गोरक्षनाथाय ॥

योगवाणी

(धर्म-संस्कृति, अध्यात्म एवं योग प्रधान पत्रिका)

संस्थापक-सम्पादक

राष्ट्रसन्त ब्रह्मलीन गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ

प्रधान सम्पादक

गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ

प्रबन्ध सम्पादक

डॉ. प्रदीप कुमार राव

सम्पादक

डॉ. प्रांगेश कुमार मिश्र

प्रकाशक

श्री गोरखनाथ मन्दिर

गोरखपुर - २७३०१५

web: www.gorakhnathmandir.in

E-mail: gorakhnathmandir@yahoo.com

दूरभाष : (०५५१) २२५५४५३, २२५५४५४

॥ श्रीशिवगोरक्षस्तुतिः ॥

गोरक्षनाथाष्टकम्

(हंसचित्रम्)

योगीन्द्राप्तहितोपदेशविशदादेशार्थतत्त्वं शिरो,
ज्ञानं कर्म च दक्षिणोत्तरगतावक्षोभ्यपक्षावसौ।
आत्मा योगवरः स्वरूपविषया पुच्छं प्रतिष्ठा चितो
माया यस्य जगत्त्रयं विजयते हंसः स नाथो विभुः ॥ १ ॥

द्वैतं दक्षिणपक्ष एष विहितोऽद्वैतं विविच्योत्तरः,
पक्षो योगशिरो विशेषपरमाद्वैतं तदात्मा महान्।
पुच्छं केवलभाव एव विदुषां, हृत्पद्मनीडं मह-,
न्माया यस्य जगत्त्रयं विजयते, हंसः स नाथो विभुः ॥ २ ॥

ऐन्द्री दिक्शुभपूर्वरूपमतुलं, पुच्छं प्रतीची दिशो-,
दीची याम्यदिशावतीव विपुलौ, दक्षौ हि पक्षौ हितौ।
आत्मैवापदिशं दिशासु तरले, सूर्येन्दुबिम्बे दृशौ,
माया यस्य जगत्त्रयं विजयते, हंसःस नाथो विभुः ॥ ३ ॥

श्रुत्यन्ते कथितं शिरो महदिदं पक्षोऽयमत्रोत्तरः
सोयंऽ दक्षिणपक्ष एव विपुलः स्थूलोऽयमात्माचलः।
स्वच्छं पुच्छमिवेदमेव भुवनं, नीडं सरूपाभिधं,
माया यस्य जगत्त्रयं विजयते, हंसः स नाथो विभुः ॥ ४ ॥

क्रमशः ....

योगामृत

गोरक्ष उवाच :

गुरुजी! कौन सोवे ? कौन जागे ? कौन दशहुँ दिशि जाय ?
कहाँ ते उठत पवन ? कहाँ ते होठ कण्ठ तालुका बजाय ? ॥ 61 ॥

भावार्थ–हे गुरु ! इस शरीर में अष्ट पहरी कौन जागे, कौन सोचता है। कौन दशों दिशा में दौड़ता है? प्राण–वायु कहां से उर्ध्व गामी होता है, और कण्ठ तालिका की ध्वनिक नाड़ियों को कौन बजाता है?

मत्स्येन्द्र उवाच :

अवधू! मन सोवे पवन जागे, कल्पना दशहुँ दिशि जाय।
नाभि से उठत पवन, हृदयते होठ कण्ठ तालुका बजाय ॥ 62 ॥

भावार्थ–हे शिष्य ! सुषुप्तावस्था में मन ही अन्तर्मुख संकल्प विकल्प रहित होता ही मानो सोता है। प्राण–वायु ही तीनों अवस्थाओं में जाग्रत रहता है। अन्तःस्थ कल्पना ही जाग्रत विश्व जीव चक्षु स्थानी होकर तथा स्वप्नावस्था में तैजस नामक जीव कण्ठ हिता नाम सूक्ष्म रोम सहस्राणु भाग में दौड़ती है। पवन नाभी से उर्ध्व–गामी होकर चलता है। भाषा–विज्ञान के सिद्धान्त से कण्ठगत ध्वनिं–तन्त्रियों को होठ ही चलने की यान्त्रिक गति प्रदान करता है।

गोरक्ष उवाच :

गुरुजी! कहाँ ते मन करे गुण ध्यान? कहाँ ते पवन करे आवागमन?
कौन मुख चन्दा निर्झर झरे? कौन मुख काल निद्रा करे? ॥ 63 ॥

भावार्थ–हे गुरु! साधक को मन की स्थिति कहाँ पर रहने से बहुगुणा करे? मन का आवागमन कहाँ से होता है? किस अन्तर्हित से ज्योति स्वर चन्द्र का उदय होता है और किस अन्तर्हित काल की सुषुप्तावस्था होती है।

मत्स्येन्द्र उवाच :

अवधू! हिरदयते मन करे गुन ध्यान, नाभिते करे आवागमन ।
आप मुख चन्दा निर्झर करे, मनसुख काल निद्रा करे ॥ 64 ॥

भावार्थ–हे शिष्य! अनाहत चक्र हृदय स्थान की साधना से मन वश होकर साधक का हित करता है। नाभी से प्राण उर्धगामी होकर पुनः अपने अर्ध स्थान को प्राप्त करता है। अन्तर्हित चन्द्र स्वर अपने श्रम–साध्य कसोटी से सुखानन्द तथा मन अन्तर्मुख निश्चय से काल का दमन होता है।

(गोरक्ष–मत्स्येन्द्र संवाद)

■

गोरखवाणी

पंच अग्नि

ॐ मूल अगनि का रेचक नांव सोषि लेह रक्त पीत अर आंव।
पेट पूठ दोऊ सम रहै। तौ मूल अगनि जती गोरष कहै।।

भुयंगम अगनि का भुयंगम नांम। तजिबा भिछ्या भोजन ग्रांम।
मूल की मूस अमीरस थीर। तिसकूं कहिए हो सिधो पवन का सरीर।।

ब्रह्म अगनि ब्रह्म नाली धरि लेउ जांण।
उलटंत पवनां रवि ससि गिगन समांन।।

ब्रहम अगनि मधे सीझिबा कपूरं। तिस कूं देषि मन जायबा दूरं।
सिव धरि सकति अहैनिस रहै। ब्रह्म अगनि जती गोरष कहै।।

काल अगनि तीनि भवन प्रवानीं । उलटंत पवनां मोषतं पानी।
षाया पीया षाष होय रहै। काल अगनि जती गोरष कहै।।

रुद्र अगनि का त्राटिका नाम। सोषित लेव होठ कंठपेट पूठि नव ठांम।
उलटत केस पलटंत चांम। तिसकू कहियै हो सिधो त्राटिका नांम।।

रुद्र रेवंती संजमे षिवंती। जोग जुगति करि साधंत जोगी।
पंच अगनि भरि पूर रहै। सिध संकेत श्रीगोरष कहै।।

पूरिको पीवत वायु कुंभ को काया सोधनं।
रेचको तजतं विकार त्राटिको आवागवण बिबरजंत।।

सिधका का मारगा कोई साधू जांणै। पंच अगनि श्रीगोरषनाथ बाषांणै।
पांचौ अगनि संपूरण भई। अनंत सिधां मधे जती गोरष कही।।

इति श्री पंच अगनि पठंते सुणते कथंते करंते पापे नह लिपंते पुंने न हारंते।
ॐ नमो सिवाय ॐ नमो सिवाय। गुरु मछंद्रनाथ के पादुका नमस्तुते।।

■

राशियों का मासफल

सोमवार - ०१-१०-२०२५ से ३१-१०-२०२५ मंगलवार तक

*डॉ0 दिग्विजय शुक्ल

मेष:- आपके परिवार में मंगल योग बनेगा। व्यापार में अचानक विशेष लाभ होगा। भाग-दौड़ जीवन से मुक्ति मिलेगी। आर्थिक लाभ के सुअवसर बनेंगे। धार्मिक कार्य करने का अवसर मिलेगा। दूरस्थ यात्रा पर जा सकते हैं। प्रतियोगी परीक्षा में सफलता मिलेगी।

वृष:- परिवार के साथ धार्मिक यात्रा करने का योग बनेगा। मानसिक परेशानी उत्पन्न हो सकती है। अपने क्रोध पर अंकुश लगाएं। व्यापार में ध्यान देना आवश्यक होगा। आर्थिक विपन्नता दूर होगी। स्वजनों का सहयोग मिलेगा, जोखिम भरे कार्यों में सफलता मिलेगी।

मिथुन:- आपकी वाणी में कठोरता उत्पन्न होगी। परन्तु मन में शान्ति और प्रसन्नता का अनुभव करेंगे। शैक्षिक कार्यों में विशेष ध्यान देना होगा। परिजनों को परेशानी उत्पन्न होगी। स्वत: अपने सेहत पर भी ध्यान दें। आर्थिक संकट उत्पन्न हो सकता है।

कर्क:- अपने वाणी में मधुरता लाये। अध्ययन एवं अध्यापन में अभिरुचि बढ़ेगी। व्यवसायिक कार्यों में समस्या उत्पन्न होगी। अधिक परिश्रम पर थोड़ा फल मिलेगा। धीरे-धीरे आर्थिक परेशानी दूर होगी। प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता मिलेगी।

सिंह:- स्वास्थ्य सेहत पर ध्यान देने की आवश्यकता है। पारिवारिक सम्बन्धों में लाभ मिलेगा। सन्तान की समुन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। आर्थिक खर्च में बहुलता आयेगी। व्यवसाय में अस्थिरता की स्थिति बन सकती है। शिक्षा में सजगता अति जरुरी होगी।

कन्या:- आपके बिगड़े हुए कार्य बनेंगे। सन्तान का सुख प्राप्त होगा, आर्थिक रूप से मजबूत होंगे। प्रतियोगी परीक्षाओं मे सफलता मिलेगी। परिवार में खुशी का वातावरण रहेगा। व्यापार में स्थिरता आयेगी। धर्म कार्य करने का अवसर बनेगा।

तुला:- आपके मन में आत्म विश्वास की वृद्धि होगी। क्रोध का अतिरेक नहीं करना चाहिए, सामाजिक कार्य में व्यस्तता बढ़ेगी। आय के श्रोत बनेंगे। मित्रगणों का सहयोग मिलेगा। आर्थिक विपन्नता दूर होगी अपने व्यवसाय में परिश्रम के द्वारा सफलता मिलेगी।

वृश्चिक:- आपकी मानसिक परेशानी दूर होगी। प्रतिस्पर्धा वाले कार्यों में सफलता मिलेगी। सन्तान की समुन्नति का मार्ग प्रशस्त होगा। व्यवसायिक कार्यों में सफलता मिलेगी, शिक्षा संवर्धन में लगातार प्रयास करते रहें। धर्म के प्रति आस्था की जरूरत है।

धनु:- आपकी आर्थिक स्थिति मजबूत होगी। व्यवसायिक कार्यों में सफलता मिलेगी। संतान की समुन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। व्यापार में आने वाली बाधायें दूर होगी। शिक्षा के प्रति सजग रहने की आवश्यकता है।

मकर:- पारिवारिक पक्ष से सजग सतर्क रहने की आवश्यकता है। आपको मानसिक परेशानी उत्पन्न हो सकती है। आर्थिक विपन्नता दूर होगी। कार्मिक क्षेत्र में सफलता मिलेगी। प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता मिलेगी। सन्तान की उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे।

कुम्भ:- दाम्पत्य जीवन में खुशहाली का वातावरण रहेगा। स्वजनों का प्रेम एवं सहयोग मिलेगा। कार्मिक क्षेत्र में बदलाव की स्थिति बनेगी। सन्तानपक्ष में सुखद लाभ मिलेगा। आर्थिक संकट दूर होंगे। धार्मिक कार्य करने का सुयोग बनेगा।

मीन:- अपने मन में आत्मविश्वास पैदा करें। अधिक क्रोध अच्छा नहीं होगा। शिक्षा में सजगता बहुत जरूरी है। व्यापार में अवरोध उत्पन्न हो सकता है। प्रतियोगी परीक्षाओं में समस्याएं हो सकती है। आर्थिक बाधा दूर होंगी।

■

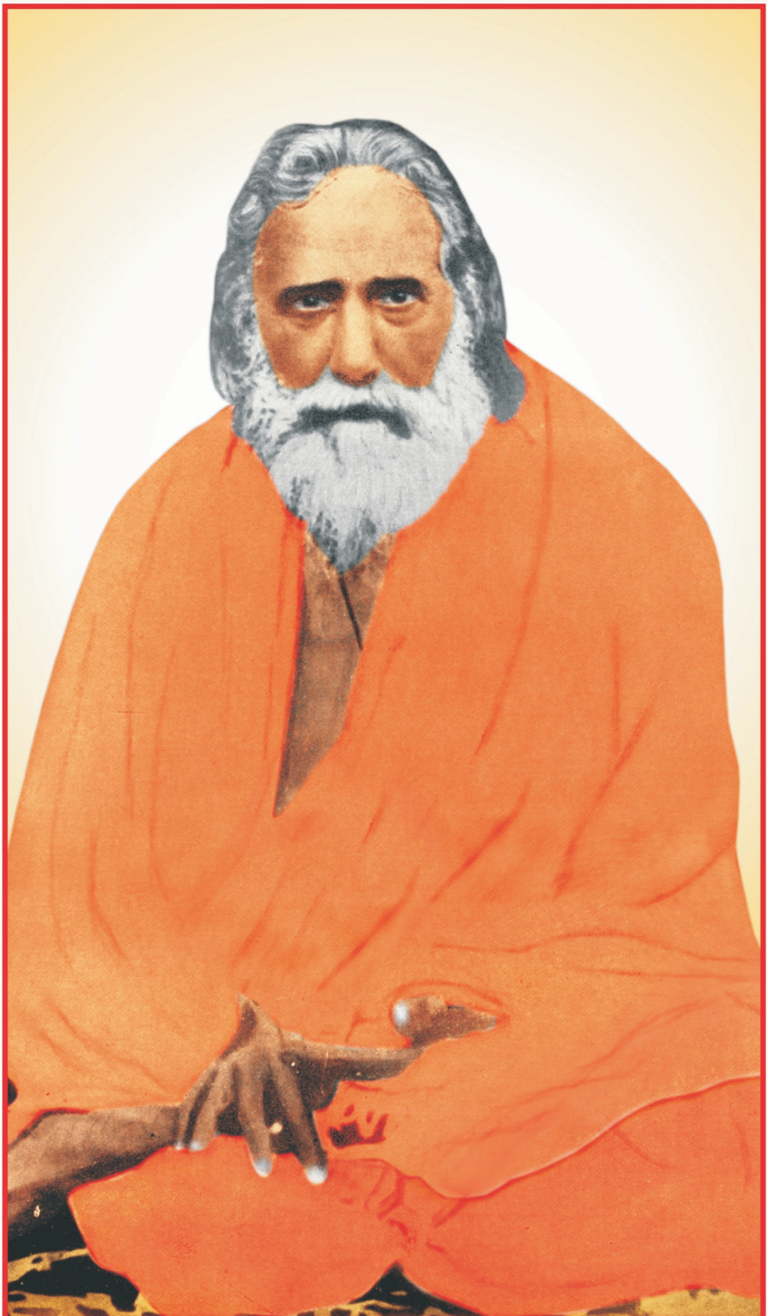

योगिराज बाबा गम्भीरनाथ

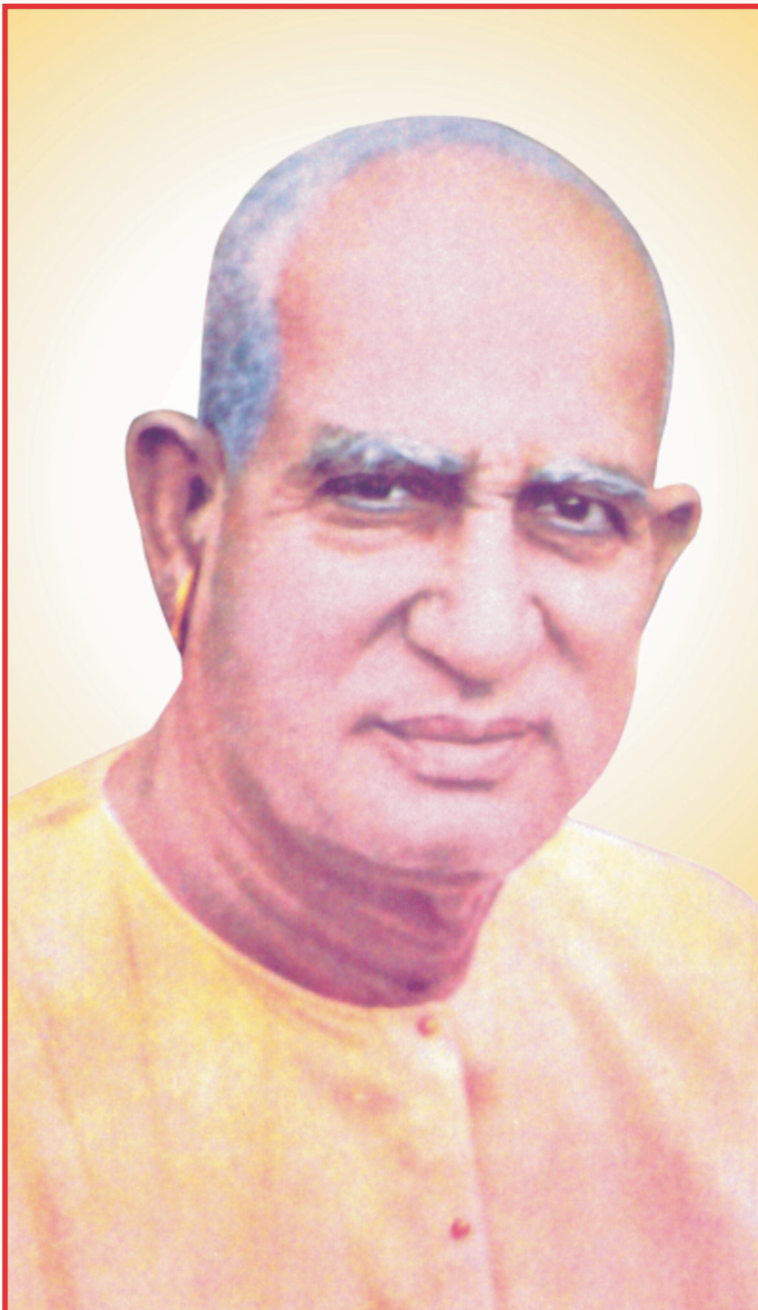

युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज

गोरखपुर : अतीत से वर्तमान तक

*योगी आदित्यनाथ

महायोगी गोरखनाथ की पुण्य स्मृति को संजोए गोरखपुर की भूमि को महायोगी गुरु श्री गोरखनाथ की तपस्थली बनने का सौभाग्य मिला। यह भूमि शिवावतारी भगवान् गोरखनाथ की कृपा-पात्र बनकर पवित्र हुई। गुरु श्री गोरखनाथ ने जब इस भूमि को अपनी तपस्यास्थली के रूप में चुना, उस समय अचिरावती (राप्ती) नदी के तट पर स्थित यह भू-क्षेत्र निश्चित रूप से वनाच्छादित निर्जन क्षेत्र रहा होगा, जो किसी महायोगी के एकान्तवास एवं योग-सिद्धि के अनुकूल था। यह कहना कठिन है कि व्यावहारिक योग प्रवर्तक महायोगी गोरखनाथ की यह तपस्थली कब जन-निवेश बनी और इसने कब गाँव-कस्बा-नगर का रूप धारण किया। उल्लेख मिलता है कि रुद्रपुर (देवरिया जनपद) के सतासी नरेश विश्राम सिंह नि:सन्तान थे। उन्होंने उनवल (गोरखपुर जनपद) राजवंश के राजकुमार होरिल अर्थात् मंगल सिंह को गोद लिया। मंगल सिंह ने महायोगी गोरखनाथ की तपस्थली के दक्षिण में एक छोटा सा नगर बसाया, जिसका नाम गुरु गोरखनाथ जी की पुण्य स्मृति में गोरखपुर रखा। यह नगर बाद में सतासी राज की राजधानी बना।

उत्तर प्रदेश के पूर्वाञ्चल का यह भूभाग 'गोरखपुर' नगर की स्थापना से पूर्व प्राचीन भूगोल में आर्यावर्त के अन्तर्गत मध्यदेश के मध्य में विद्यमान कारूपथ का रमणीय प्रदेश था। नगाधिराज देवात्मा हिमालय के चरणतल में पुण्य सलिला सरयू, अचिरावती (राप्ती), हिरण्यवती (छोटी गण्डक), सदानीरा (बड़ी गण्डक) और अनोमा (आमी) आदि अनेक छोटी-बड़ी नदियों, ताल तलैयों से सिंचित इस क्षेत्र के गर्भ में ही प्राचीनतम मानव सभ्यता का उदय हुआ। यह पुण्यभूमि श्रेष्ठतम संस्कृति का वाहक बनने के साथ-साथ भारतीय धर्म-संस्कृति की क्रमिक विकास-यात्रा, अनेक शासन-प्रणालियों, राजनीतिक घटनाक्रमों, राजवंशों के उत्थान-पतन, अनेक सांस्कृतिक आरोहों-अवरोहों, भारतीय इतिहास के कितने ही शलाका पुरुषों के अधीति बोधाचरण प्रचारणों का मौन मुखर साक्षी रही है।

इक्ष्वाकुवंशी अयोध्या राज्य का हिस्सा होने का गौरव इस क्षेत्र को प्राप्त है। कभी यह क्षेत्र रामराज्य का गवाह बना तो कभी महाराजा युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में श्री गोरक्षनाथ को आमंत्रण देने हेतु महाबली भीमसेन के आगमन का। महात्मा बुद्ध के

---

*पीठाधीश्वर गोरक्षपीठ एवं मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश

युग में कपिलवस्तु के शाक्यों, रामगाम के कोलियों और पिप्पलिवन के मोरियों (मौर्य) के गणतंत्रों के उत्थान-पतन का साक्षी यह क्षेत्र भारतवर्ष के महान् शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय विक्रमादित्य एवं सम्राट हर्ष के साम्राज्य का हिस्सा रहा। तथापि सतासी नरेश मंगल सिंह द्वारा गोरखपुर की स्थापना के पूर्व किसी राजनीतिक सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में गोरखपुर का कोई उल्लेख प्राप्त नहीं होता।

दिल्ली में मुगल-सत्ता के समय बागी पठानों के विरुद्ध मुगलों द्वारा सैन्याक्रमणों के क्रम में श्रीनेतों को गोरखपुर छोड़ना पड़ा और यहाँ प्रथम मुस्लिम मुगल छावनी स्थापित हुई। 1625 ईस्वी में बाँसी और सतासी के श्रीनेतों ने गोरखपुर को स्वतंत्र कराया और 1680 ईस्वी तक गोरखपुर को अपनी सत्ता का केन्द्र बनाया। औरंगजेब के समय शहजादा मुअज्जम शिकार खेलने गोरखपुर आया। गोरखपुर पर उसने अधिकार स्थापित कर पुनः मुगल छावनी बनाया। इस नगर का नाम बदलकर अपने नाम पर मुअज्जमाबाद रखा, किन्तु यह नाम अस्थायी सिद्ध हुआ और प्रचलन में 'गोरखपुर' नाम चलता रहा। 1801 ईस्वी में एक सन्धि में अवध के नवाब ने गोरखपुर और आस-पास के क्षेत्रों को अंग्रेज शासकों को दे दिया। अंग्रेज शासकों द्वारा जन-प्रचलित 'गोरखपुर' नाम को ही स्वीकृति प्रदान करने के साथ 'गोरखपुर' नाम को प्रतिष्ठा प्राप्त हो गयी तथा आधुनिक गोरखपुर के एक नये युग का सूत्रपात हुआ। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि 'गोरखपुर' का नाम महायोगी श्री गोरखनाथ की तपस्थली होने के कारण मिला और जनस्वीकृति के कारण अन्ततः शासकों को यह नाम स्वीकार करना पड़ा।

आधुनिक गोरखपुर महानगर की विकास यात्रा उन्नीसवीं शताब्दी की दहलीज पर प्रारम्भ होती है। 1800 ईस्वी के पूर्व गोरखपुर बिखरे हुए मुहल्लों का एक कस्बा था। 1869 ईस्वी में लगभग पचास हजार की आबादी वाले मुहल्लों को मिलाकर इसे नगरपालिका श्रेणी-तीन का दर्जा प्राप्त हुआ। उस समय इस नगर की सीमा लगभग पच्चीस वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में प्रसरित थी। पश्चिम में राप्ती नदी से लेकर पूर्व में वर्तमान दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के पूर्वी छोर पर स्थित रेसकोर्स तक तथा उत्तर में रसूलपुर, श्री गोरखनाथ मन्दिर, जटेपुर से लेकर दक्षिण में महेवा चुंगी तथा हौसूपुर तक यह नगर फैला हुआ था। 1885 ईस्वी में गोरखपुर रेलवे लाइन से जुड़ गया तथा यहाँ रेलवे स्टेशन के विकास के साथ परिवहन के एक नये युग की शुरुआत हो गयी। 1891 ईस्वी में यह नगर गोरखपुर मण्डल का मुख्यालय बना। आजादी के बाद 1949 ईस्वी में गोरखपुर को नगरपालिका श्रेणी दो का दर्जा प्राप्त हुआ तथा इस नगर का क्षेत्रफल 38.85 वर्ग किलोमीटर हो गया। इस कालखण्ड तक

गोरखपुर की पहचान श्री गोरखनाथ मन्दिर से हो चुकी थी। गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज का प्रखर तेजस्वी नेतृत्व गोरखपुर को प्राप्त हो चुका था। यह नगर धर्म-संस्कृति के साथ-साथ सामाजिक-राजनीतिक चेतना के जागरण के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त करने लगा था।

गोरखपुर में 1923 ईस्वी में गीताप्रेस की नींव रखी गयी। गीताप्रेस की स्थापना से हिन्दू धर्म-संस्कृति की अमूल्य धरोहर धार्मिक ग्रन्थों के प्रकाशन के साथ गोरखपुर को हिन्दू धर्म-संस्कृति के प्रसार की भी प्रतिष्ठा प्राप्त होने लगी। इसी समय भारतकेन्द्रित शिक्षा के प्रसार का दायित्व गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज ने संभाला और 1932 ईस्वी में महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् की स्थापना से लेकर गोरखपुर विश्वविद्यालय की स्थापना तक की कालजयी भूमिका का निर्वहन किया। एक धार्मिक योगपीठ ने शिक्षा-चिकित्सा के माध्यम से सेवा का वह दीप प्रज्ज्वलित किया, जिसके प्रकाश में लोक-कल्याण का मार्ग युगों-युगों तक प्रशस्त होता रहेगा। गोरखपुर धर्म-अध्यात्म-लोककल्याण की त्रिवेणी बनने लगा।

1951 ईस्वी की जनगणना में गोरखपुर की आबादी एक लाख बत्तीस हजार चार सौ छत्तीस दर्ज हो चुकी थी। 1956 ईस्वी में डेढ़ लाख की आबादी के साथ गोरखपुर को नगरपालिका श्रेणी-एक का दर्जा प्राप्त हो गया। आजादी के बाद राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ द्वारा वैकल्पिक शिक्षा व्यवस्था खड़ी करने की पहल पर स्थापित देश का पहला सरस्वती शिशु मन्दिर, महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् द्वारा 1956 ईस्वी में स्थापित निजी क्षेत्र का पहला महाराणा प्रताप पॉलिटेक्निक एवं 1962 ईस्वी में मदन मोहन मालवीय इंजीनियरिंग कॉलेज (वर्तमान में मदन मोहन मालवीय प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय गोरखपुर) की स्थापना तथा 1963 ईस्वी में फर्टिलाइजर के शिलान्यास से तकनीकी शिक्षा, उद्योग एवं रोजगार के क्षेत्र में गोरखपुर का पदार्पण हो चुका था। 1968 ईस्वी में बाबा राघव दास मेडिकल कॉलेज एवं 1973 ईस्वी में श्री गोरखनाथ मन्दिर परिसर में महन्त दिग्विजयनाथ आयुर्वेदिक कॉलेज की स्थापना से स्वास्थ्य एवं स्वास्थ्य शिक्षा के क्षेत्र में गोरखपुर अपना महत्त्वपूर्ण कदम बढ़ा चुका था। 1969 ईस्वी के लोकसभा चुनाव में गोरखपुर संसदीय सीट से महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज को हिन्दू महासभा के प्रत्याशी के रूप में विजयी बनाकर लोकसभा में भी चटक केसरिया रंग के साथ अपनी अलग पहचान बनाकर गोरखपुर ने भारतीय राजनीति के एक नये युग की शुरुआत कर दी थी। उत्तर प्रदेश की विधानसभा में मानीराम सीट से श्री गोरखनाथ मन्दिर के उत्तराधिकारी अवेद्यनाथ जी महाराज के रूप में गोरखपुर द्वारा भगवा पहले ही फहराया जा चुका था। 1974 ईस्वी

में आकाशवाणी की स्थापना ने गोरखपुर को एक और नयी पहचान दी। 1977 ईस्वी में गोरखपुर विकास प्राधिकरण की स्थापना से नगरीय विकास को गति मिली तथा 1982 ईस्वी में गोरखपुर को महापालिका का दर्जा प्राप्त हो गया। 1994 ईस्वी में नगर निगम का दर्जा प्राप्त कर गोरखपुर शिक्षा-चिकित्सा की सुविधा से युक्त पूर्वी उत्तर प्रदेश का एक प्रतिष्ठित व्यापारिक व्यावसायिक केन्द्र बनकर उभरा।

अस्सी नब्बे के दशक की तमाम उठा-पटक एवं उत्थान-पतन के साथ गोरखपुर आज पुनः अपनी नवोन्मेष-यात्रा-पथ पर अग्रसर हो चुका है। टेराकोटा लोक-कला की विशिष्ट पहचान है। हथकरघा (हैण्डलूम) स्थानीय बाजार के वस्त्र उद्योग की विशिष्टता है। 1990 ई. में बन्द हो चुके फर्टिलाइजर कारखाना के अत्याधुनिक संस्करण एवं अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) का शिलान्यास सांसद एवं गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज के प्रयत्न से भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा 22 जुलाई, 2016 ई. को किया गया। इन दो बड़े संस्थानों की स्थापना से गोरखपुर के विकास के इतिहास के एक नए युग के आरम्भ की आस जगी है। साथ ही गोरक्षपीठ के निरंतर प्रयास से महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय तथा महायोगी गुरु गोरखनाथ आयुष विश्वविद्यालय की स्थापना से गोरखपुर ने तरक्की की नयी सीढ़ियाँ चढ़ना प्रारम्भ कर दिया है। अब यह केवल मात्र अपना भाग्योदय नहीं कर रहा है, बल्कि पूर्वाञ्चल का पिछड़ापन कम करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह भी कर रहा है। खाद कारखाना और एम्स की स्थापना से गोरखपुर में हरितक्रान्ति एवं निरोगी काया-क्रान्ति का मार्ग प्रशस्त हुआ है।

गोरखपुर शहर की संस्कृति अपने आप में अद्वितीय एवं अद्‌भुत है। जीवन और गति का सामंजस्य यहाँ के सामाजिक जीवन की विशिष्टता है। महानगर होते हुए भी जीवन की आपा-धापी, यंत्रवत् मानवीय व्यस्तता एवं दिन-रात दौड़ते महानगरीय संस्कृति की छाप से बचा यह शहर आज भी जीवन जीने की राह पर मंथर गति से चलता रहता है। एक-दूसरे का सुख-दुख जानने, गप्प करने, मौज करने, चलते-फिरते हाल-चाल पूछने का समय गोरखपुरिये निकाल ही लेते हैं। ब्रह्ममुहूर्त में जगना, योग-व्यायाम एवं टहलना शहर का मिजाज है, जो महायोगी गोरखनाथ जी की नाथ-परम्परा से ही प्रेरित है।

लोक-परम्परा का पालन करने में यहाँ के नागरिक अभ्यस्त हैं। लोक-जीवन की समृद्ध संस्कृति का धनी गोरखपुर का जन-जीवन बड़ा शान्त और मेहनती है। पर्व-त्योहार मनाने, उत्सवों के आयोजन, लोक-गीत एवं लोक नृत्य में गोरखपुर

चहकता रहता है। आल्हा, कजरी, कहरवा, फाग जैसी लोकगीत की स्मृतियाँ आज भी गोरखपुर संजोए हुए है। हारमोनियम, ढोलक, मंजीरा, मृदंग, नगाड़ा, थाली, घड़ा इत्यादि वाद्ययन्त्र यहाँ की लोक संगीत परम्परा को समृद्ध बनाते हैं। यह नगर मूलतः धार्मिक आध्यात्मिक प्रवृत्ति का नगर है। घरों में देवस्थान की परम्परा है। अधिकांश नागरिकों की प्रतिदिन पूजा-पाठ के साथ दिनचर्या प्रारम्भ होती है। देवालयों में भी नियमित देवदर्शन अथवा विशेष दिनों यथा-सोमवार, मंगलवार, शनिवार को देव दर्शन एवं पूजा यहाँ की जीवन पद्धति का अभिन्न हिस्सा है। किसी भी आयोजन से पूर्व देवपूजा की विशिष्ट परम्परा है। मारवाड़ी, सिन्धी, पंजाबी एवं बंगाली समाज की उपस्थिति यहाँ के सामाजिक जीवन की विविधता को और आकर्षक बना देती है। यह समाज यहाँ के सामाजिक जीवन में रच-बस गया है। हिन्दी भोजपुरी के सम्मिलित स्वर में बोलते गोरखपुर के माटी की सुगन्ध विशुद्ध रूप से देशी है।

गोरखपुर में श्री गोरखनाथ मन्दिर के अतिरिक्त गीताप्रेस, गीतावाटिका, श्री विष्णु मन्दिर, महोदव झारखण्डी मन्दिर, बुढ़िया माई मन्दिर, सूर्यकुण्ड पोखरा एवं मन्दिर, रामगढ़ ताल, विनोद वन, तारा मण्डल, राजकीय बौद्ध संग्रहालय, रेलवे संग्रहालय इत्यादि दर्शनीय स्थलों सहित शहर कई महत्त्वपूर्ण पार्कों से युक्त है। गोरखपुर नगर की भौगोलिक-सामाजिक-सांस्कृतिक विकास यात्रा पर महायोगी गुरु श्री गोरक्षनाथ जी की सदैव अहैतुकी कृपा बनी रही है। माना जाता है कि आज भी यह क्षेत्र गुरु श्री गोरक्षनाथ जी की सूक्ष्म रूप में उपस्थिति तथा उनके कृपा-पात्र होने का साक्षी है।

■

नाथ पन्थ : एक परिचय

*डॉ हर्षवर्धन सिंह

भारत में नाथ सम्प्रदाय के उद्भव एवं विकास का अपना एक विशेष इतिहास है। वस्तुतः नाथ सम्प्रदाय भारत का परम प्राचीन, उदार, ऊँच-नीच की भावना से परे एवं अवधूत अथवा योगियों का सम्प्रदाय है। इस सम्प्रदाय में योग साधना की कठिन प्रक्रियाओं के माध्यम से आध्यात्मिक क्षेत्र में अभ्युत्थान के अनूठे प्रयोग किये गए और सदियों तक सिद्धों के चमत्कारों से यह महादेश एवं पवित्र धरती जगमगाती रही। वास्तव में नाथ योगियों ने अपनी सिद्ध विद्या के माध्यम से पीड़ित लोगों का हमेशा कल्याण किया और इन योगियों के प्रयासों से योग सम्प्रदाय भारत की सीमाओं को लांघकर अफगानिस्तान, तिब्बत तथा चीन तक फैल गया। इन योगियों ने सामाजिक कल्याण की दृष्टि से तथा स्व-उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए हठ योग साधना, कर्म योग साधना तथा राष्ट्रप्रेम आराधना का सहारा लिया।

नाथ पंथ का उद्भव एवं विकास-नाथ सम्प्रदाय के योगियों का उद्भव का समय सुनिश्चित नहीं हैं कि कब हुआ था विभिन्न विद्वान अलग-अलग समय निर्धारित करते हैं। बहुतों की धारणा हैं कि इसके मूल प्रवर्तक गुरु गोरखनाथ थे, जिन्होंने सर्वप्रथम कनफटा योगियों की परम्परा चलायी थी और हठयोग की साधना को प्रचलित किया था। परन्तु विक्रम की 8वीं शताब्दी में रची गई वाणभट्ट की पुस्तक 'कादम्बरी[1]' तथा उसके पहले की रचना ''मैत्रेयी उपनिषद[2]'' में कनफटा योगियों के उल्लेख' मिलते हैं, हठयोग के सम्बन्ध में भी एक जनश्रुति हैं कि उसका सर्वप्रथम प्रचार करने वाले मार्कण्डेय ऋषि थे जिनका हमें पौराणिक परिचय मात्र उपलब्ध हैं। गुरु गोरखनाथ से संम्भवतः प्राचीन ग्रन्थों में भी हठयोग की क्रियाओं की चर्चा की गयी हैं। इसके अतिरिक्त यदि हठयोग से अभिप्राय हठपूर्वक या बल पूर्वक द्वारा की गई किसी योग साधना से है, तो वह वस्तुतः गुरु गोरखनाथ की नहीं हो सकती। गुरु गोरखनाथ का अधिक ध्यान काया - शोधन की ओर ही था जो आसनों तथा एक संयत जीवन का भी परिणाम हो सकता है। गुरु गोरखनाथ नाथ पंथ के सर्वप्रधान नेता थे और वास्तव में इसे संगठित करने एवं सुव्यवस्थित रूप देने में सबसे अधिक हाथ इन्हीं का था। गुरु गोरखनाथ का आविर्भाव विक्रम सम्वत् की दशवीं शताब्दी में

*शोध अध्येता, महायोगी गुरु श्रीगोरक्षनाथ शोधपीठ
दीनदयाल उपाधयाय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

भारतवर्ष में हुआ था। मध्य युग में उत्पन्न इस पंथ में बौद्ध, शैव तथा योग की परम्पराओं का समन्वय दिखायी देता है। यह हठयोग की साधना पद्धति आधारित पंथ है। यह पंथ शिव की उपासना करता है। नाथपंथी शिव के वंशज माने जाते हैं। नाथ पंथ उतना ही प्राचीन है जितना शिव प्राचीन है। आदिनाथ शिव की आराधना करना ही, नाथ पंथ की प्राचीनता की पुष्टि है। स्पष्टतः यह कहा जा सकता है कि नाथ पंथ बहुत ही अनादि काल से विद्यमान था। आदिनाथ शिव के बाद मत्स्येंद्रनाथ हुए।

मत्स्येन्द्रनाथ के बारे में ऐसी मान्यता है कि जब आदिनाथ शिव पार्वती को योग ज्ञान दे रहे थे तो समुद्र में एक मछली थी और उस मछली से यह उत्पन्न हुए। इन्होंने मछली के पेट में रहते हुए भी योग ज्ञान की शिक्षा ग्रहण की थी इसलिए यह मत्स्येन्द्र नाथ कहलाए। मत्स्येन्द्रनाथ सिद्ध योगी हुए। मत्स्येन्द्रनाथ जी ने गोरखनाथ जी को अपना शिष्य बनाया। मत्स्येन्द्रनाथ चूंकि शिव अवतार माने गए तो उन्होंने यह पहचाना कि गोरखनाथ ही नाथ पंथ का प्रवर्तन करेंगे और इस परम्परा को विश्व में फैलाएँगे। वहीं हुआ गोरखनाथ जी ने तत्कालीन समाज में जो बुराईयाँ, कुरितियाँ, व्याप्त हो चुकी थी उन पर प्रहार किया, विभिन्न सम्प्रदायों की अच्छी शिक्षाओं को अपनाया और नाथ पंथ का प्रवर्तन किया। आदि काशीनाथ पंथ का प्रवर्तन तथा संगठन कार्य करते गए और कालान्तर में गोरखनाथ जी को ही नाथ पंथ का संस्थापक मान लिया। गया। इस बात की पुष्टि कि मत्स्येन्द्रनाथ ने गोरखनाथ को शिव अवतारी बताया और अपने शिष्य के रूप में उनको दीक्षा दी, विभिन्न ग्रंथों से होती है। गोरखनाथ कथा, पुराण (पद्म स्कन्द शिव ब्रह्माण्ड), तांत्रिक ग्रंथ (तन्त्र महापर्व) उपनिषद् (वृहदारण्यक) एवं अन्य प्राचीन ग्रंथ करते हैं।[3]

'नाथ' शब्द :

नाथ शब्द की व्युत्पत्ति- न+अथ : नाथ, अर्थात् जिसका आदि ज्ञात नहीं, उसका अन्त भी अज्ञात है। नाथ दर्शन में योग सम्प्रदाय का इतिहास आदिकाल से प्रचलित माना जाता है। वैदिक युग में ऋग्वेद से पता चलता है कि यहां पर नाथ शब्द का प्रयोग 'नाथितासो' के रूप में हुआ है। यहां इस शब्द का अर्थ है -याचनीय देव की स्तुति करना। पाणिनी द्वारा लिखित अष्टाध्यायी पुस्तक में नाथ शब्द का अर्थ- विकास, याचना, प्रार्थना, स्तुति करना, दुःख से रक्षा करना, ईश्वर से ऐश्वर्य प्राप्त करना तथा आशीष प्राप्त करना है।

नाथ पंथ में 'नाथ' शब्द के शाब्दिक और दार्शनिक अर्थ भी मिलते हैं।[4] पं0 गोपीनाथ

कविराज द्वारा संपादित गोरख सिद्धान्त संग्रह वास्तव में प्रमाण–संग्रह ग्रंथ हैं। इसमें राजगुह और शक्तिसंगमतंत्र के प्रमाणों को उद्धृत किया गया हैं। राजगुह के अनुसार 'ना' का अर्थ हैं 'अनादिरूप' और 'थ' का अर्थ हैं (भुवनत्रय का) स्थापित होना। अर्थात् नाथ वह तत्व हैं जो अनादिरूप हैं तथा भुवनत्रय की स्थिति का कारण है शक्तिसंगमतंत्र के अनुसार 'ना' का तात्पर्य उस नाथ ब्रह्म से हैं जो मोक्ष ज्ञान में दक्ष है, उसका ज्ञान कराता है। 'थ' का अर्थ है अज्ञान के सामर्थ्य को स्थगित करने वाला नाथ वह तत्व है जो मोक्ष प्रदान करता है, नाथ ब्रह्म का अनुबोधन करता है तथा अज्ञान का स्थगन करता है। इन दोनो ग्रन्थों के अनुसार नाथ तत्व परम तत्व है। वह भुवनत्रय का कारण, परमज्ञान का दाता तथा मोक्षदाता है। वह मोक्षदाता भी है इसकी पुष्टि गोरक्ष[5] सिद्धान्त संग्रह ने भी की है। उसके अनुसार सृष्टि स्थिति लय की प्रक्रिया में शक्ति विश्व का सृजन करती हैं, शिव उसका परिपालन करते हैं (काल उसका संहार करते हैं तथा नाथ मुक्ति देते हैं। नाथ के तीन रूप माने गये हैं। अद्वैत परिवर्ती नाथ प्राप्य देवता हैं। निराकर ज्योति रूप नाथ ध्येय हैं तथा आदि गुरु के रूप में साकार नाथ उपास्य हैं। अद्वैत परवर्ती नाथ दो प्रकार (नादरूपा और बिन्दुरूपा) की सृष्टि के मूल हैं। एक स्थान पर कहा गया है कि सांसारिक रीति विपरीत है उसमें अनुक्रम तो है ही नहीं, व्यतिक्रम है। उदाहाराणार्थ सांसारिक रीति से धर्म, अर्थ काम और मोक्ष के क्रम को स्वीकार किया जाता है। नाथमतानुसार इनका क्रम होगा मोक्ष, धर्म, अर्थकाम। इस मत का सर्वोपरि पुरुषार्थ मोक्ष है अतः मोक्षदाता नाथ ही इस मत के सर्वेसर्वा हैं।

वामन शिवराम आप्टे ने नाथ शब्द को पुल्लिंग संज्ञा मानकर इसे रक्षक, प्रभु, स्वामी आदि अर्थों का बोधक माना है। जैन धर्म में भी 24 तीर्थंकरों की प्रचलित परम्परा में सभी के साथ नाथ शब्द जुड़ा हुआ है और ऋषभदेव को आदिनाथ माना गया है। इस बारे में महत्वपूर्ण बात यह है कि नाथ परम्परा के प्रथम प्रवर्तक का नाम भी आदिनाथ है। कई विद्वानों के अनुसार नाथपंथ एक आचार–विचार की पद्धति है और आधुनिक बुद्धिजीवियों ने इस शब्द का प्रयोग एक धार्मिक परम्परा के रूप में किया है। वास्तव में नाथपंथ एक सम्प्रदाय न होकर एक दार्शनिक पद्धति है, जिसको किसी वाद से बांधना सरासर गलत है। योगदर्शन की परम्परा में नाथ पंथ का अपना विशेष महत्व है। गोरक्षसिद्धान्त संग्रह नामक पुस्तक में नाथ पंथ को कल्याण का मार्ग माना गया है तथा इसका भारतीय ज्ञान परम्परा में काफी महत्व है।

नाथ पंथियों को बारहपंथी योगी भी कहते है। नाथ पंथियों को बारहपंथी योगी कहने का आधार यही है कि यह नाथ पंथ संगठित करते समय गोरखनाथ ने 12 शाखाओं में विभक्त कर दिया था। प्रत्येक पंथ का अपना एक विशेष स्थान तथा महात्मा होता है, जिसे संबंधित पंथ वाले अपना तीर्थ और आदि प्रवर्तक मानकर साधना करते हैं। 12 पंथो का जो विभाजन किया गया उसमें भी ऐसी मान्यता सामने आती है कि शिव द्वारा स्थापित 12 पंथ तथा गोरखनाथ द्वारा विभक्त 12 पंथ इन दोनों में विभिन्न मत मंतान्तरों के कारण आपसी झगड़े होते थे, इसीलिए गोरखनाथ जी ने 6 पंथ शिव जी द्वारा स्थापित तथा 6 पंथ अपने द्वारा स्थापित इन दोनों को मिलाकर एक पंथ का निर्माण किया वह पंथ ही 12 पंथी शाखा जो आज वर्तमान में देखी जा रही है, उसका निर्माण हुआ।[6]

नाथ पंथ का विस्तार

नाथ पंथ विश्वव्यापी है इसका विस्तार भारत से बाहर नेपाल, तिब्बत, पाकिस्तान के मक्का मदीना तक देखा गया है। गोरखनाथ जी ने नेपाल तथा तिब्बत के देशों में तपस्या की थी तो चौरंगीनाथ जी ने भी तिब्बत तथा मक्का मदीना तक अपनी तपस्या का विस्तार किया था। इन देशों में नाथ पंथ के मठ एवं पवित्र साधना स्थल आज भी विद्यमान हैं। वर्तमान में सम्पूर्ण भारत अर्थात् भारत के लगभग सभी राज्यो में नाथ पंथ का विस्तार देखा जा सकता है। 12 पंथो में विभक्त नाथ सम्प्रदाय के मठ तथा अनेक महापुरुषों की तपस्थली देखी जाती है। नाथ पंथियो की मुख्य साधाना स्थली भारत के उत्तराखण्ड राज्य में हरिद्वार तथा उत्तर प्रदेश राज्य के गोरखपुर में गोरखनाथ मन्दिर है। पश्चिमी भारत में गोरखनाथ शाखा के साधुओं को धर्मनाथी तथा अन्य भाग में कनफटा या गोरखनाथी नाम से प्रसिद्धि प्राप्त है। नाथ पंथ विभिन्न नाम जैसे योगी सम्प्रदाय, सिद्ध सम्प्रदाय तथा कौल मत एवं अवधूत मत से भी प्रसिद्ध है।

भारत में नाथ पंथ की सनातन जीवनधारा आदिकाल से प्रवाहित होती आ रही है और नाथ शब्द का प्रयोग वैदिक युग में भी होता रहा है। प्राचीन भारत के इतिहास का विश्लेषण करने से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि परम् योगाचार्य एवम् महायोगी गुरु गोरखनाथ जी धाार्मिक–सांस्कृतिक सन्धिकाल की एक महान विभूति हुये हैं। ऋग्वेद में नाथ शब्द का प्रयोग सृष्टिकर्त्ता, ज्ञाता तथा सृष्टि के निमित्त रूप में किया गया है। महायोगी गोरखनाथ जी द्वारा लिखित गोरखवाणी में नाथ शब्द का प्रयोग रचयिता तथा परमतत्व के रूप में किया गया है। गोरखवाणी के अनुसार नाथमार्ग

योगप्रधान मार्ग है और इसके अन्तर्गत वे सभी अनुयायी जन आते हैं जो नाथ पंथ की मान्यताओं के प्रति अपनी अगाध श्रद्धा व आस्था रखते हैं। नाथ पंथ की प्राचीन परम्पराओं के अनुसार महायोगी गोरखनाथ एक सार्वकालिक व्यक्तित्व एवं सन्त हैं तथा भारत में शंकराचार्य के बाद गोरखनाथ जैसा प्रभावशाली और युगप्रवर्तक व्यक्ति कोई अन्य नहीं हुआ।[7] चूंकि प्राचीन काल से चले आ रहे नाथ सम्प्रदाय को नाथ योगी मच्छेन्द्रनाथ तथा उनके शिष्य महायोगी गोरखनाथ ने व्यवस्थित रूप दिया, फिर भी इस परम्परा को आगे बढाने में अन्य नाथ योगियों का योगदान काफी महत्वपूर्ण रहा। नाथ सम्प्रदाय को संगठित करने में महायोगी गोरखनाथ की भूमिका सर्वविदित सत्य है। इनके प्रयासों से ही नाथ सम्प्रदाय की योग विधाओं को एकत्र किया गया। इस मत के अनुसार गुरु और शिष्य को तिब्बती बौद्ध धर्म में महासिद्धों के रूप में जाना जाता है। नाथ योगी विभिन्न स्थानों का भ्रमण करने के बाद अपनी उम्र के अन्तिम पड़ाव पर किसी एक जगह ठहर कर अखण्ड धूनी रमाते हैं तथा कुछ हिमालय क्षेत्र में ध्यानमुद्रा में लीन हो जाते हैं। प्रत्येक योगी के हाथ में एक चिमटा, कमण्डल, कान में कुण्डल, कमर में कमरबन्द, आदि होता है तथा जटाधारी साधु रूप में ये योगी धूनी रमाकर ध्यान में लीन हो जाते हैं। इन योगियों को अवधूत या सिद्ध योगी कहा जाता है। ये योगी अपने गले में काली ऊन का एक जनेऊ पहनते हैं जिसे सिले कहा जाता है। इनके गले में एक सींग की नादी होती है। अतः इन दोनों को सींगी सेली कहा जाता है। इस पंथ के साधक लोग सात्विक भाव से भगवान् शिव की अराधाना में लीन रहते हैं और ये लोग अलख शब्द से शिव का ध्यान करते हैं। अलख और आदेश शब्द का प्रयोग करके ये अभिवादन करते हैं। ऐतिहासिक मान्यताओं के अनुसार नाथ योगी हठ साधना पर विशेष बल देते हैं।

नाथ पंथ की साधना पद्धति

नाथ पंथ उन साधकों का पंथ है, जो नाथ को परमतत्व स्वीकार कर उनकी प्राप्ति के लिए योग साधना करते हैं तथा दीक्षा के बाद नाम के अन्त में नाथ उपाधि जोड़ते हैं। छठी ईस्वी से बारहवीं ईस्वी तक का समय धार्मिक दृष्टि से साधना पद्धति का काल था। यह पद्धतियाँ या साधनाएं इतनी वृहद् और प्रचण्ड हो चुकी थीं कि समस्त सम्प्रदाय भले ही वह वैदिक हो या अवैदिक, वैष्णव हो या शैव, बौद्ध हो या जैन सभी तंत्र आधाारित सृष्टितत्व, देवमण्डल, यंत्रविधान, मंत्र साधना, आचार-विधान तथा हठ योगी साधानाओं को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में प्रश्रय देने लगे थे। यही वह कारण था कि इस काल को तांत्रिक काल कहा जाता है।[8] नाथ पंथ धर्म पद्धति में

शिव ही इस ब्रह्माण्ड के संचालक माने गये हैं। शिव की इच्छा ही शक्ति है। शक्ति तत्व कुछ अवस्थाओं से होता हुआ कुण्डलिनी जाग्रत करता है। यही जाग्रत कुण्डलिनी समस्त जगत की शक्ति है, जो माया से अधिक स्वरूप मानी गई है। नाथपंथी मानते हैं कि शक्ति की उपासना पिण्ड (शरीर) की उपासना से की जाती है जिसका मूल आधार योग है।

नाथमत योगसाधना को तथा योगी को सर्वश्रेष्ठ मानता है। तंत्रमहार्णव में बताया गया है कि योगी ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश है। वही पूर्ण मोक्ष है। वही सृष्टिकर्ता और हर्ता है। षोडशिनित्यातंत्र में कहा गया है कि तंत्रों के उपदेशक नाथ ही हैं और नवनाथों ने तंत्रों की रचना की है। तांत्रिक अनुष्ठान का फल योग ही है। अन्तर बस यह है कि तांत्रिकों का अनुष्ठान बहिरंग होता है। इसके पश्चात् वे अवधूत पद को प्राप्त करने के लिए सूक्ष्म शक्ति कुण्डलिनी की पूजा करते हैं। प्रकृति के सभी विकारों का अवधूतन करने वाला सिद्ध ही अवधूत है। अवधूत योगी ही सद्गुरु पद को प्राप्त कर सकता है। भारतीय धर्म साधना के क्रमिक विकास की अवस्था में तीन अवस्थाएं मानी गई हैं जो कि निम्नलिखित हैं –

1. ज्ञान की साधना।
2. कर्म की साधना।
3. भक्ति की साधना।

उपर्युक्त तीनों साधानाओं का आधार क्रमशः ज्ञान, संवेदन और संकल्प हैं जो कि मनुष्य को तीन मौलिक प्रवृत्तियों से सम्बन्ध रखता है। धीरे–धीरे भारतीय साधना–कर्म से प्रभावित होकर लोक–स्वभाव के अनुसार अग्रसर हुई। उसी के आधार पर नाथ पंथ की प्रवृत्तियों का ऐसा स्वरूप स्थिर हुआ जिसने मध्य युग की भावधारा को दूर तक प्रभावित किया।[9] नाथ मत की साधना का लक्ष्य मुक्ति है, यह मुक्ति 'कुण्डलिनी' उद्बोध के द्वारा प्राप्त होती है उसके लिए बिन्दु, वायु और मन का अचंचल और स्वाधीन होना ही साधक का लक्ष्य है। नाथ मत योगसाधना को तथा योगी को सर्वश्रेष्ठ मानता है।

नाथों की साधना पद्धति में 'पिण्ड' व 'ब्रह्माण्ड एकत्ववाद' का सिद्धांत मान्य है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए पिण्ड ज्ञान आवश्यक है। 'सिद्ध–सिद्धान्तपद्धति' में कहा गया है कि साधक को पिण्डगत नव चक्र, षोडश आधार, तीन लक्ष्य, पंचव्योम आदि अवश्य जानना चाहिये। इसी प्रकार आगे कहा गया है कि जो साधक पिण्डगत् एक

स्तम्भ, नवद्वार, पंचदेवता आदि को नहीं जानता, वह सिद्धि प्राप्त नहीं कर सकता। पिण्ड के अन्तर्गत जो कुछ भी है, वह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का संक्षिप्त रूप या प्रतीक है। इसमें देवता, परमतत्व, पाताल, ब्रह्माण्ड, कलाएं, वर्ण, उपवर्ण, द्वीप, समुद्र, खण्ड, पर्वत, उपपर्वत, नदियां, उपनदियां, नक्षत्र, राशियां, नवग्रह, तिथियां, तारामण्डल, दानव, यक्ष, राक्षस, भूत–प्रेत, मुनिगण, मातृ–शक्तियां, मेघ, तीर्थ,अनन्त, सिद्ध, चन्द्र, सूर्य, कृमि–कीट, पतंग, सुख–दुःख, मुक्ति, शांति, सभी निवास करते हैं।

नाथ सम्प्रदाय के इतिहास का अवलोकन करने से स्पष्ट होता है कि भारत में 84 सिद्धों और 9 नाथ परम्परा का अपना विशेष महत्व है। इनके प्रारम्भिक 10 नाथों में आदिनाथ, आनन्दीनाथ, करालनाथ, विकरालनाथ, महाकालनाथ, कालभैरवनाथ, बटुकनाथ, भूतनाथ, वीरनाथ, और श्रीकांतनाथ प्रमुख हैं। इन नाथों के शिष्यों में नागार्जुन, जड़भरत, हरिश्चन्द्र, सत्यनाथ, चरपटनाथ, अवधनाथ, वैराग्यनाथ, कान्ताधरीनाथ, जालन्धरनाथ, और मालयार्जुननाथ प्रमुख हैं। बौद्ध धर्म की वज्रयान शाखा की उत्पति होने के बाद 8वीं सदी में भारत में नाथ योगियों के 84 सिद्धों के प्रभाव से नई परम्परा शुरू हुई। ऐतिहासिक मान्यता के अनुसार इन सिद्धों के रूप में वज्रयान शाखा का विकास हुआ। नाथ गुरु परम्परा में मच्छेन्द्रनाथ, गोरखनाथ, जालन्धरनाथ, नागेशनाथ, भारतीनाथ, चरपटनाथ, कनीफनाथ, गहनीनाथ, तथा रेवननाथ 9 प्रमुख नाथ गुरु हुए हैं। इसके अलावा आदिनाथ, मीननाथ, खपरनाथ, सतनाथ, बालकनाथ, गोरखनाथ, वीरूपाक्षनाथ, भर्तृहरिनाथ, खेरचीनाथ, रामचन्द्रनाथ, ओंकारनाथ, उदयनाथ, संतोशनाथ, अचलनाथ, गजबेलीनाथ, चौरंगीनाथ, आदि भी नाथ योगी हुए हैं। बाबा शीलनाथ, दादा धूनीवाले, गजानन महाराज, गोगानाथ, पण्डरीनाथ और सांईबाबा को भी नाथ परम्परा का माना जाता है।[10]

भगवान् दतात्रेय को वैष्णव और शैव दोनों ही सम्प्रदाय से सम्बन्धित माना जाता है और उनकी गणना भी नाथ योगियों में होती है। देवों के देव महादेव शिव ने भी स्वयं को जोगी कहा है। हठ प्रदीपिका के लेखक और इस ग्रन्थ के प्रथम टीकाकार ब्रह्मानन्द ने 33 नाथ योगियों को सिद्ध योगी माना है और आदिनाथ को प्रथम योगीनाथ कहा है। नाथ सम्प्रदाय के आदिनाथ भगवान शिव हैं। तंत्र शास्त्र में जड़भरत, गोरखनाथ, मच्छेन्द्रनाथ, सत्यनाथ, जालन्धरनाथ आदि को प्रमुख नवनाथ कहा गया है। बौद्ध धर्म में भी 84 सिद्ध नाथ योगियों का उल्लेख है। हिन्दी साहित्य

के कवियों ने भी नाथ परम्परा पर काफी कुछ लिखा है। अनेक विद्वानों के अनुसार भारत में नाथ परम्परा का इतिहास काफी प्राचीन है और यह सनातन धर्म का ही अभिन्न अंग है। इस परम्परा में अहिंसा, सत्य, क्षमा, दया, धैर्य, अस्तेय, सरलता, मिताहार, पवित्रता, संतोष, तप, दान, जप, ईश्वर पूजा, होम उच्चारण को प्रमुख माना गया है। इस दर्शन की प्रमुख पुस्तकें सब्दी, पद, शिष्यादर्शन, प्राण, सांकली, आत्मबोध, अभयमात्र जोग, सप्तवार, रोमावली, ज्ञानतिलक, पंचगात्र, दयाबोध, गोरखवचन, अष्टमुद्रा आदि महत्वपूर्ण हैं।[11]

उक्त विवरण को आधार बनाकर यह कहा जा सकता है कि गोरखनाथ ने नाथ पंथ को प्रवर्तन किया उन्होंने नाथ पंथ को बारहपंथ/शाखाओं में विभक्त कर, एक साथ इन बारह शाखाओं को सम्मलित कर नाथ पंथ को सगंठित किया। ऐसी धारणा है कि गोरखनाथ ने नाथ पंथ को बारह शाखाओं में विभाजित करके संगठित रूप देते समय छः शाखाएं शिव पंथ के समय और छः शाखाएं गोरखपंथी की एक साथ रखी ताकि एक साथ चल कर नाथ पंथ एक मजबूत सम्प्रदाय बन कर योग का प्रचार-प्रसार तथा लोक कल्याणकारी कार्य कर सके। यह सत्य है कि इन बारह पथों के अपने-अपने गुरु है अपने-अपने सिद्ध स्थान है अपने- अपने मठ है अपने-अपने गुरुओं की तपोभूमि है लेकिन फिर भी ये 12पंथी गोरखनाथ के अनुयायी है, गोरखनाथ की साधना पद्धति (हठ योग) द्वारा साधना करते है, और गोरखनाथ को अपना गुरु नाथ पंथ का संस्थापक मानते है।

नाथ पंथी यह कहते है कि उनके गुरु गोरखनाथ हैं, उनका मुख्य ग्रन्थ (हठयोग प्रदिपिका) नाथ ग्रंथ है, गोरक्ष सिद्धान्त पद्धति है और वे हठ योग द्वारा अपनी साधना करते है। नाथ पंथ योगियों का मुख्य उद्देश्य हठ योग साधना के द्वारा आत्मसाक्षात्कार को प्राप्त करना है। नाथ पंथी हठ योगी पंथ है, साधना मात्र में योग से जो सिद्धि प्राप्त होती है उसका प्रयोग ये नाथ पंथी जन कल्याण तथा लोकल्याण में करते हैं, जन-जन को स्वास्थ्य की मजबूती हो सके, इसकी जागरूकता प्रदान करते है। इतिहास में प्रमाण है कि किस प्रकार गोरखनाथ चौरंगीनाथ, मस्तनाथ, आदिनाथ पंथयोगियों ने अपनी योग तपस्या से प्राप्त सिद्धियों को जनकल्याण कार्यों में प्रयोग किया। यदि भारत में नाथ पंथ के उद्‌भव एवं विकास का विश्लेषण किया जाये तो यह बात स्पष्ट हो जाती है कि नाथ पंथ सनातन धर्म से सम्बन्धित है। आज तक जितने भी नाथ योगी हुए हैं, उन्होंने भारतीय समाज में व्याप्त कष्टों का निवारण

किया और आम जनमानस ने भी अपनी अगाध श्रद्धा नाथ पंथ के प्रति दिखलाई। नाथ परम्परा में गोरखनाथ एक ऐसे महान योगी हुए जिन्होंने समस्त भारत का भ्रमण किया और राजनीति के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। वर्तमान समय में उत्तरप्रदेश में गोरखपुर मठ के महन्त योगी आदित्यनाथ मुख्यमंत्री हैं और वे बड़े जोश के साथ जनकल्याण में अपना योगदान दे रहे हैं।

संदर्भ :

[1]कादम्बरी – लेखक वाण भट्ट ।

[2]मैत्रेयी उपनिषद लेखक वाण भट्ट।

[3]बनर्जी, अक्षय कुमार फिलोस्फी ओफ गोरखनाथ, प्रकाशक महन्त दिग्विजय नाथ ट्रस्ट, गोरखनाथ मन्दिर गोरखपुर मुद्रक, नवचेतन प्रेस, नया बाजार, दिल्ली–6, 29–10–1961 ।

[4]गोरख सिद्धान्त संग्रह : गोपीनाथ कविराज ।

[5]गोरख सिद्धान्त संग्रह : गोपीनाथ कविराज ।

[6]श्री वीरनाथ जी (आई पंथ) श्री नाथ चरित, 14 जनवरी, 2013 प्रकाशक अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ, योगी महासभा, गुरु गोरखनाथ मन्दिर अखाड़ा, अपर रोड़, हरिद्वार (उत्तरांचल)।

[7]योगी सिद्ध श्री शंकरनाथ अस्थलबोहर मठ का संक्षिप्त इतिहास सम्पादन कोकचन्द्र शास्त्री, प्रकाशक महन्त श्रेयोनाथ योगी, अस्थल बोहर (रोहतक) हरियाणा राज्य 1970 ई0 मुद्रण सम्राट आर्ट ऑफसेट प्रैस, हाडी धीरज, दिल्ली–6।

[8]शाण्डिल्य भक्ति सूत्र 2 में जुनेजा, वेदप्रकाश का आलेख, राजस्थान का नाथ साहित्य, पृ. 36।

[9]सोलंकी, डॉ. कोमलसिंह, नाथ पंथ और उसका प्रभाव, पृ. 125।

[10]विलासनाथ योगी नव नाथ (चरित्र दर्शन एवं साक्षात्कार विधि) 15 जनवरी, 2019, प्रकाशक बाबा मस्तनाथ मठ अस्थल बोहर, जिला रोहतक, हरियाणा।

[11]योगी शंकरनाथ, श्री मस्तनाथ चरित (द्वितीय संस्करण 14 जनवरी, 2013) प्रकाशक, बारह पन्थ योगी महासभा गुरु गोरखनाथ मन्दिर, हरिद्वार, उत्तराखण्ड योगी शंकरनाथ ।

■

आध्यात्मिक शक्ति संचय और अन्तःकरण शुद्धि का महापर्व है नवरात्र

***डॉ. अभिषेक कुमार उपाध्याय**

भारतीय संस्कृति विविधता में एकता की परिचायक है जहां पर्व, त्यौहार एवं शक्ति साधना के विशिष्ट अवसर प्राप्त होते रहते हैं। हम भारतवासियों को वर्षभर में विभिन्न रंग बिरंगी मौसम से जुड़े पर्वों एवं त्यौहारों को करने का सौभाग्य मिलता है। वैसे ही नवरात्र का भी अपना विशेष महत्व है। यदि हम 'नवरात्र' शब्द की बात करें तो इससे नौ अहोरात्रों अर्थात् विशेष रात्रियों का बोध होता है। इस समय शक्ति के नौ रूपों की उपासना की जाती है। 'रात्रि' शब्द सिद्धि का प्रतीक है। हमारे ऋषि-मुनियों ने रात्रि को दिन की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण बताया है इसलिए दीपावली, होलिका, शिवरात्रि और नवरात्र आदि उत्सवों को रात में ही मनाने की परम्परा रही है। यदि रात्रि का कोई विशेष रहस्य न होता तो ऐसे उत्सवों को 'रात्रि' न कहकर 'दिन' ही कहा जाता लेकिन नवरात्र के दिन, नौ दिन नहीं कहे जाते। संस्कृत व्याकरण के अनुसार 'नवरात्रि' कहना त्रुटिपूर्ण है। नौ रात्रियों का समाहार, समूह होने के कारण यह द्वंद समास है और यह शब्द पुल्लिंग रूप 'नवरात्र' में ही शुद्ध है।

नवरात्र क्या है? यदि इस विषय पर बात करे तो इसके बहुत से पर्याय मिलते है। पृथ्वी द्वारा सूर्य की परिक्रमा काल में एक वर्ष की चार संधियां हैं। उनमें मार्च व सितंबर माह में पड़ने वाली गोल संधियों में वर्ष के दो मुख्य नवरात्र पड़ते हैं जिसे समाज का प्रत्येक वर्ग भक्ति भाव से करता है। इन दिनों में स्वाभाविक रूप से रोगाणु आक्रमण की सर्वाधिक आशंका होती है। ऋतु संधियों में अक्सर शारीरिक बीमारियां बढ़ती हैं अतः उस समय स्वस्थ रहने के लिए, शरीर को शुद्ध रखने के लिए, तन-मन को निर्मल और पूर्णतः स्वस्थ रखने के लिए की जाने वाली प्रक्रिया का नाम 'नवरात्र' है। अमावस्या की रात से अष्टमी तक या प्रतिपदा से नवमी की दोपहर तक व्रत-नियम चलने से नौ रात यानी 'नवरात्र' नाम सार्थक है। यहां रात गिनते हैं इसलिए नवरात्र यानी नौ रातों का समूह कहा जाता है। यदि हम इसके रूपक की बात करे तो यह हमारे शरीर के नौ मुख्य द्वारों के लिए भी प्रसिद्ध है। इसके भीतर निवास करने वाली जीवनी शक्ति का नाम ही दुर्गा देवी है। हमारे मुख्य इन्द्रियों के अनुशासन, स्वच्छता, तारतम्य स्थापित करने के प्रतीक रूप में शरीर तंत्र को वर्षभर के लिए सुचारु रूप से क्रियाशील रखने के लिए नौ द्वारों की शुद्धि का पर्व नौ दिन तक मनाया जाता है। यह हमारे समझ की उपज हो सकती है।

---

*मुख्य न्यासी श्री श्री 1008 श्री मौनी बाबा चैरिटेबल ट्रस्ट न्यास व गुरुकुल एवं मन्दिर सेवा योजना प्रमुख जम्मू कश्मीर प्रान्त।

शरीर को सुचारु रखने के लिए विरेचन, सफाई या शुद्धि प्रतिदिन तो हम करते ही हैं किन्तु अंग–प्रत्यंगों की पूरी तरह से भीतरी सफाई करने के लिए हर छह माह के अनन्तर आन्तरिक सफाई की एक प्रक्रिया करनी चाहिए। सात्विक आहार के व्रत का पालन करने से शरीर की शुद्धि, साफ–सुथरे शरीर में शुद्ध बुद्धि, उत्तम विचारों से ही उत्तम कर्म, कर्मों से सच्चरित्रता और क्रमशः मन शुद्ध होता है। स्वच्छ मन–मंदिर में ही तो ईश्वरी शक्ति का स्थायी निवास होता है।

ऐसे इन चारों नवरात्रों में

शारदीय नवरात्र वैभव और भोग प्रदान देने वाले है। गुप्तनवरात्र तन्त्र सिद्धि के लिए विशेष है जबकि चैत्र नवरात्र आत्मशुद्धि और मुक्ति के लिए। वैसे सभी नवरात्र का आध्यात्मकि दृष्टि से अपना महत्व है। यह प्रकृति और पुरुष के संयोग का भी समय होता है। प्रकृति मातृशक्ति होती है इसलिए इस समय देवी की पूजा होती है। गीता में भगवान् श्री कृष्ण ने कहा है कि सम्पूर्ण सृष्टि प्रकृतिमय है और वह पुरुष हैं। यानी हम जिसे पुरुष रूप में देखते हैं वह भी आध्यात्मिक दृष्टि से प्रकृति यानी स्त्री रूप है। स्त्री से यहां आशय यह है कि जो पाने की इच्छा रखने वाला है वह स्त्री है और जो इच्छा की पूर्ति करता है वह पुरुष है।

नवरात्र के नौ दिनों में मनुष्य अपनी भौतिक, आध्यात्मिक, यांत्रिक और तांत्रिक इच्छाओं को पूर्ण करने की कामना से व्रतोपवास रखता है और ईश्वरीय शक्ति इन इच्छाओं को पूर्ण करने में सहायक होती है। यदि ज्योतिष की दृष्टि से विचार करे तो चैत्र नवरात्र का विशेष महत्व है क्योंकि इस नवरात्र के समय ही सूर्य का राशि परिवर्तन होता है। सूर्य बारह राशियों में भ्रमण पूरा करते हैं और फिर से अगला चक्र पूरा करने के लिए पहली राशि मेष में प्रवेश करते हैं। जबकि सूर्य और मंगल दोनों की राशि मेष है और यह अग्नितत्त्व वाली है इसलिए इनके संयोग से गर्मी की शुरुआत होती है।

चैत्र नवरात्र से ही सनातन हिन्दू नववर्ष के पंचांग की गणना शुरू होती है। इसी दिन से वर्ष के राजा, मंत्री, सेनापति, वर्षा, कृषि के स्वामी ग्रह का निर्धारण होता है और वर्ष में अन्न, धन, व्यापार और सुख शांति का आंकलन किया जाता है। नवरात्र में देवी और नवग्रहों की पूजा का कारण यह भी है कि ग्रहों की स्थिति पूरे वर्ष अनुकूल रहे और जीवन में खुशहाली बनी रहे।

यदि हम धार्मिक दृष्टि से नवरात्र की बात करें तो इसका भी बहुत महत्व है क्योंकि इसी समय आदि शक्ति जिन्होंने इस पूरी सृष्टि को अपनी माया से ढ़का हुआ है और जिनकी शक्ति से सृष्टि का संचालन हो रहा है जो भोग और मोक्ष देने वाली देवी हैं

वह पृथ्वी पर होती है इसलिए इनकी पूजा और आराधना से इच्छित फल की प्राप्ति अन्य दिनों की अपेक्षा जल्दी होती है।

जहां तक बात है चैत्र नवरात्र की तो धार्मिक दृष्टि से भी अत्यधिक प्रभावशाली और ऐतिहासिक है। बहुत से पौराणिक कथाओं में इसके विषय में उल्लेख मिलते है। इसी पावन पवित्र चैत्र नवरात्र के पहले दिन आदिशक्ति प्रकट हुई थी और देवी के कहने पर ब्रह्मा जी ने सृष्टि निर्माण का काम शुरु किया था।

इसलिए चैत्र शुक्ल प्रतपिदा से हिन्दू नववर्ष शुरु होता है। चैत्र नवरात्र के तीसरे दिन भगवान विष्णु ने मत्स्य रूप में पहला अवतार लेकर पृथ्वी की स्थापना की थी। इसके बाद भगवान विष्णु का सातवां अवतार जो भगवान राम का है वह भी चैत्र नवरात्र में हुआ था। इसलिए धार्मिक दृष्टि से चैत्र नवरात्र का महत्व और अधिक बढ़ जाता है।

हमारी सार्वभौम संस्कृति में नवरात्र महापर्व का विशेष महत्व केवल धर्म, अध्यात्म और ज्योतिष की दृष्टि से ही नहीं है बल्कि वैज्ञानकि दृष्टि से भी बहुत महत्व है। ऋतु बदलते समय बहुत से रोग उत्पन्न होते है जिन्हें हम आसुरी शक्ति भी कहते हैं उनका अंत करने के लिए हवन, पूजन किया जाता है इसमें बहुत सी जड़ी, बूटियों और वनस्पतियों का प्रयोग किया जाता है। हमारे ऋषि मुनियों ने न सिर्फ धार्मिक दृष्टि को ध्यान में रखकर नवरात्र में व्रत और हवन पूजन करने के लिए बताया होगा बल्कि इसके वैज्ञानिक आधार को भी अधिक महत्व दिया है। नवरात्र के अवसर पर व्रत और हवन पूजन स्वास्थ्य के लिए बहुत ही लाभदायक है। इसका कारण यह है कि चारों नवरात्र ऋतुओं के संधिकाल में होते हैं यानी इस समय मौसम में बदलाव होता है जिससे शारीरिक और मानसिक बल की कमी भी प्रतीत होती है। शरीर और मन को पुष्ट और स्वस्थ बनाकर नए मौसम के लिए तैयार करने के लिए व्रत करने की प्रक्रिया को बहुत गहन अध्ययन और चिन्तन के उपरान्त हमारे ऋषियों ने शोध करके लाया है। तभी से इस अवसर पर लोग अपनी आध्यात्मिक और मानसिक शक्ति संचय करने के लिए अनेक प्रकार के व्रत, संयम, नियम, यज्ञ, भजन, पूजन, योग–साधना आदि करते हैं। कुछ साधक इन रात्रियों में पूरी रात पद्मासन या सिद्धासन में बैठकर आंतरिक त्राटक या बीज मंत्रों के जप द्वारा विशेष सिद्धियां प्राप्त करने का प्रयास करते हैं।

अध्यात्म पथ पर प्रगतिशील साधकों के लिए नवरात्रि के त्यौहार की अनुपम महिमा है। वर्ष में एक बार शिवरात्रि महापर्व साधकों के लिए साधना में प्रवेश करने का काल है तो वहीं नवरात्र उत्सवपूर्ण नवीनीकरण के लिए नौ रात्रियां हैं।

नवरात्र व्रत का मूल उद्देश्य है इंद्रियों का संयम और आध्यात्मिक शक्ति का संचय है। वस्तुतः नवरात्र अंतःशुद्धि का महापर्व है। आज वातावरण में चारों तरफ विचारों का प्रदूषण हो गया है। ऐसी स्थिति में नवरात्र का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है। अपने भीतर की ऊर्जा जगाना ही देवी उपासना का मुख्य प्रयोजन है।

चैत्र नवरात्र के समय में तो वसंत ही होता है। प्रकृति की शोभा देखते ही बनती है। इस समय वनस्पतियां भी नवीन पल्लव धारण करती हैं। प्रकृति का उल्लास अपना प्रभाव समस्त वातावरण पर डालती है। जीवधारियों के मन विशेष प्रकार की मादकता से भर जाते हैं। आध्यात्मिक दृष्टि से मनीषियों ने इन दिनों आत्मा के ऋतुमति होने का आलंकारिक संकेत किया है। उनके अनुसार, इन दिनों वह अपने प्रियतम परमात्मा से मिलने के लिए विशेष रूप से आतुर होती है। नौ दिन का व्रत-उपवास प्राकृतिक उपचार के समतुल्य माना जा सकता है। इसमें प्रायश्चित के निष्कासन और पवित्रता की अवधारणा दोनों भाव सम्माहित हैं।

नवरात्र में व्रत का विशेष उद्देश्य है। उस समय प्रकृति में एक विशिष्ट ऊर्जा होती है, जिसको आत्मसात कर लेने पर व्यक्ति का कल्याण हो जाता है। व्रत में हम कई वस्तुओं का त्याग करते हैं और कई वस्तुओं को अपनाते हैं। आयुर्वेद की भी यही धारणा है कि पाचन क्रिया की खराबी से ही शरीर में अनेक प्रकार के रोग होते हैं क्योंकि हमारे भोजन के साथ जहरीले तत्त्व भी शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। आयुर्वेद में तो व्रत के विषय में वर्णन मिलता है। व्रत से पाचन प्रणाली ठीक होती है। व्रत, उपवास का प्रयोजन भी यह है कि हम अपनी इंद्रियों पर नियंत्रण कर अपने मन-मस्तिष्क को केंद्रित कर सकें। मनोविज्ञान भी यह कहता है कि कोई भी व्यक्ति व्रत-उपवास एक शुद्ध भावना के साथ रखता है तो उस समय उसकी सोच सकारात्मक रहती है, जिसका प्रभाव हमारे शरीर पर पड़ता है, जिससे हम अपने भीतर नई ऊर्जा का अनुभव करते हैं। इस ऊर्जा का सकारात्मक उपयोग करने के लिए हमें व्रतों का संयम-नियम बहुत लाभ पहुंचाता है। नवरात्र में कृषि-संस्कृति को भी सम्मान दिया गया है। मान्यता है कि सृष्टि की शुरुआत में पहली फसल जौ ही थी जिसे हम प्रकृति मां परम्बा जगदम्बा को समर्पित करते हैं। ऐसे तो नवरात्र पर अनेक प्रमाणिक तथ्य दिए गए है हमारे ग्रन्थों में । इन दिनों में भगवती का दुर्गा सप्तशती पाठ सविधिपूर्वक करने वाले या करवाने वाले को बहुत लाभ मिलता है। इस अवसर पर आध्यात्मिक एवं तान्त्रिक शक्तियों का प्रभाव अधिक हो जाता है इसीलिए साधकजन नवरात्र में विशेष साधना हेतु एकान्तवास में रहने का अभ्यास करते हैं। कलिकाल में भगवत नाम जप एवं भजन ही सहारा है इसीलिए हमें अपने त्यौहारों को उसकी विशिष्ट परम्परा और वैज्ञानिक आधार को ध्यान करके मनाने की

आवश्यकता है न की मेरी मर्जी, मै चाहे जो करूं। ऐसे नहीं चलने वाला क्योंकि धर्म में धर्माचार्य द्वारा संचालित नियमों का पालन हो न की सुविधा अनुसार मर्जी का।

आजकल तो प्रकृति में भी बहुत उथल पुथल चल रहा है इसीलिए हमें और अधिक मन लगाकर अपने आराध्या भगवती परांबा जगदंबा जगत जननी माता की आराधना करनी चाहिए जिससे हमें परम सौभाग्य मिलें। नवरात्र प्रत्येक सनातनी के लिए आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है इसीलिए सभी लोग इसे भक्ति भाव से करें ताकि मां भगवती की अहैतुकी कृपा हम सभी को प्राप्त हो सके। जय माता जी।

■

संस्कृत साहित्य में पशुओं का महत्व

***अनुपम वत्स**

संस्कृत साहित्य में पशुओं का महत्व अति व्यापक एवं गूढ़ है। वेदों से लेकर उपनिषदों, रामायण–महाभारत, पुराणों तथा स्मृतियों तक पशुओं को विशेष स्थान प्राप्त है। भारतीय संस्कृति में पशु केवल जीव मात्र न होकर, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के साधक, देवताओं के वाहन, मानव जीवन के सहयोगी तथा प्रतीकात्मक दार्शनिक अवधारणाओं के द्योतक भी हैं। नीचे विस्तार से विवेचन प्रस्तुत है।

1. वेद एवं उपनिषदों में पशुओं का महत्व

ऋग्वेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद आदि में गौ, अश्व, गज, वृषभ, श्वान आदि का अनेक स्थलों पर वर्णन है।

गौ (गाय) को 'अघ्न्या' कहा गया है, अर्थात् जिसे मारना पाप है। वह माता तुल्य है "गावो विश्वस्य मातरः"। अश्व (घोड़ा) को शक्ति, वीर्य और गति का प्रतीक माना गया। अश्वमेधयज्ञ इसका प्रमाण है। गज (हाथी) ऐश्वर्य, बल और राजत्व का प्रतीक है।

उपनिषदों में भी पशुओं को रूपक रूप में प्रयोग किया गया है। जैसे कठोपनिषद् में रथरूपक में इन्द्रियों को अश्व कहा गया है।

2. रामायण, महाभारत और पुराणों में पशुओं की भूमिका

रामायण में वानरराज सुग्रीव, हनुमान, जाम्बवान आदि पशुरूपी पात्र रामकार्य सिद्धि में प्रमुख सहयोगी हैं। महाभारत में अश्व, गज, बैल, श्वान आदि का वर्णन मिलता है। युधिष्ठिर का स्वर्गारोहण एक श्वान के साथ हुआ। पुराणों में प्रत्येक देवता के वाहन पशु ही हैं। शिव का वाहन नन्दी बैल, विष्णु का गरुड़ (पक्षी), इन्द्र का ऐरावत हाथी, दुर्गा का सिंह, सरस्वती का हंस, कार्तिकेय का मयूर इत्यादि।

3. धार्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से पशु पूजनीय क्यों हैं?

१. देवताओं के वाहनः अधिकांश देवताओं के साथ पशु वाहन रूप में जुड़कर पूजनीय हो जाते हैं।

२. सहजीवन का आदर्शः भारतीय संस्कृति में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना है। इस दृष्टि से पशु भी परिवार के अंग हैं।

---

 *छात्र साहित्य विभाग, श्री गोरक्षनाथ संस्कृत विद्यापीठ गोरखनाथ मन्दिर गोरखपुर

३. आर्थिक उपयोगिता : गौ दूध देती है, बैल खेती में सहायक है, हाथी युद्ध और राजकार्य में सहायक रहा है। अतः इन्हें पूजनीय माना गया।

४. प्रतीकात्मक महत्व : गौ = मातृत्व, पोषण और पवित्रता, अश्व = शक्ति और गति, गज = ऐश्वर्य और समृद्धि, सिंह = साहस और निर्भीकता।

५. नैतिक एवं आध्यात्मिक शिक्षा : युधिष्ठिर का श्वान-प्रेम धर्म की परीक्षा बना। पंचतंत्र और हितोपदेश जैसे ग्रंथों में पशु नीति शिक्षा के माध्यम बने।

4. नीति एवं कथा साहित्य में पशुओं का महत्व

पञ्चतन्त्र और हितोपदेश में पशु पात्रों के माध्यम से मानवीय गुण-दोष, राजनीति, मित्रता, छल-कपट और नीति के सिद्धांत सिखाए गए। शेर, लोमड़ी, श्वान, गज, अश्व आदि पात्र नीति कथाओं में मानवीय चरित्र का प्रतीक बनते हैं।

5. दार्शनिक एवं आध्यात्मिक महत्व

पशुओं को आत्मा की यात्रा में एक अवस्था माना गया है (त्र्यंबक-पूजन, पञ्चमहायज्ञ आदि में पशुपक्षियों की स्मृति)। शिव को 'पशुपति' कहा गया है समस्त जीव, विशेषकर पशु, उनके अधीन हैं। इसका भाव है कि पशुओं पर भी हमारा रक्षण-कर्तव्य है।

निष्कर्ष

संस्कृत साहित्य में पशु केवल प्राकृतिक जीव नहीं हैं, बल्कि, धार्मिक पूजन के अंग देवताओं के वाहन, नीति शिक्षा के साधन, प्रतीकात्मक दार्शनिक अवधारणाएँ, आर्थिक एवं सामाजिक जीवन के सहयोगी है। इस प्रकार पशु पूजित हैं क्योंकि वे मानव जीवन और धर्मपरंपरा दोनों में अनिवार्य भूमिका निभाते हैं। वेदों से लेकर नीति-कथाओं तक, संस्कृत साहित्य ने यह शिक्षा दी है कि पशुओं का सम्मान और संरक्षण ही संस्कृति की रक्षा है।

■

राष्ट्रसन्त ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज

गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त योगी आदित्यनाथ जी महाराज

॥ दीपमालापञ्चकम् ॥

डॉ. प्रांगेशमिश्र 'वेदान्ती'

सरतु सलिलधारा मार्जयेद् या मनांसि,
शमयतु हृदि तापान् द्वेषजन्यान् परार्थान्।
जनयतु हृदि सेकादङ्कुरान् स्नेहरूढान्,
हरतु च गहनान्धं मानसी दीपमाला ।।१।।

प्रवहतु पवनोऽसौ यो हरेत् कर्मजन्यं,
दुरितमखिललोकस्यास्य नो भारतस्य।
अभिजनजनभावान् द्योतयन्भारतीयान्,
विकिरतु निजरश्मीर्मानसी दीपमाला ।।२।।

ज्वलतु भुवि कृशानुर्यो दहेत् वैरभावान्,
खलजनदलनाशायास्तु दावानलश्च।
बुधजनसुखकारी शैत्यहारी च भूयात्,
प्रसरतु च विशाला मानसी दीपमाला ।।३।।

विहरतु सुरवाणी दीपयन्सर्वलोकान्,
हरतु च कलहं नो मानसं वै समन्तात्।
कविजनहृदि नित्यं वर्धतां काव्यधारा,
विलसतु भुवि भव्या मानसी दीपमाला ।।४।।

गुणगणरचनायां योजयेन्मानवान् या,
हरिहरनलिनाङ्घ्रिं भावयेद् भावुकान् वै।
निजधवलविशुद्धां ज्ञानधारां प्रशस्यां,
सरयतु भुवि नित्यं मानसी दीपमाला ।। ५।।

इति

■

श्री गोरखनाथ मन्दिर के प्रकाशन

1.	गोरखदर्शन	आचार्य अक्षय कुमार बनर्जी	150.00
2.	महन्त दिग्विजयनाथ स्मृति ग्रन्थ	डॉ. भगवती प्रसाद सिंह	80.00
3.	नाथ योग	आचार्य अक्षय कुमार बनर्जी	10.00
4.	आदर्श योगी	रघुनाथ शुक्ल	40.00
5.	महायोगी गुरु गोरखनाथ एवं उनकी तपस्थली	रामलाल श्रीवास्तव	15.00
6.	गोरखवानी	रामलाल श्रीवास्तव	110.00
7.	गोरक्षसिद्धान्त संग्रह	रामलाल श्रीवास्तव	30.00
8.	श्री गोरक्ष वैदिक पूजा पद्धति	वेदाचार्य रामानुज त्रिपाठी	8.00
9.	अमनस्क योग	रामलाल श्रीवास्तव	15.00
10.	गोरक्ष पद्धति	रामलाल श्रीवास्तव	60.00
11.	विवेक मार्तण्ड		7.00
12.	महार्थ मंजरी		6.00
13.	गोरखचरित्र	रामलाल श्रीवास्तव	30.00
14.	हठयोग प्रदीपिका	रामलाल श्रीवास्तव	30.00
15.	सिद्धसिद्धान्तपद्धति	रामलाल श्रीवास्तव	25.00
16.	योग रहस्य	आचार्य अक्षय कुमार बनर्जी	25.00
17.	योग बीज	रामलाल श्रीवास्तव	6.00
18.	शाबर चिंतामणि	नित्यनाथ सिद्ध मत्स्येन्द्रनाथ	7.00
19.	योगी सम्प्रदाय (नित्कर्म संचय)		90.00
20.	गोरख चालीसा		2.00
21.	नाथसिद्ध चरितामृत	रामलाल श्रीवास्तव	70.00
22.	नाथ पंथ गढ़वाल के परिप्रेक्ष्य में	विष्णुदत्त कुकरेती	30.00
23.	अमरकाया महायोगी गोरखनाथ	श्रीमती माया देवी	10.00
24.	युगपुरुष महन्त दिग्विजयनाथ ने कहा था	महन्त योगी आदित्यनाथ	12.00
25.	गोरखनाथ और नाथसिद्ध	डॉ. अनुज प्रताप सिंह	130.00
26.	गोरक्षदर्शन	विजय पाल सिंह	40.00
27.	तन प्रकाश	श्री श्री 108 बाबा चुन्नीनाथ जी	20.00
28.	हठयोग स्वरूप एवं साधना	महन्त योगी आदित्यनाथ	100.00
29.	यौगिक षट्कर्म	महन्त योगी आदित्यनाथ	21.00
30.	नाथ सिद्धों का तात्त्विक विवेचन	अनुज प्रताप सिंह	70.00
31.	गोरखमहिमा	महेन्द्र नाथ गोस्वामी	30.00
32.	सुभाषित त्रिशती	रामलाल श्रीवास्तव	60.00
33.	राष्ट्रीयता के अनन्य साधक महन्त अवेद्यनाथ (3 खण्ड)	प्रो. सदानन्दप्रसाद गुप्त	1100.00
34.	राजयोग स्वरूप एवं साधना	महन्त योगी आदित्यनाथ	100.00
35.	Philosophy of Gorakhnagh	A.K. Banerjee	175.00
36.	The Nath-Yogi Sampradaya and The Gorakhnath Temple		3.50
37.	An Introduction of Nath-Yoga	A.K. Banerjee	15.00
38.	महन्त अवेद्यानाथ स्मृति ग्रन्थ	प्रो. सदानन्दप्रसाद गुप्त	600.00
39.	योगिराज बाबा गम्भीरनाथ	महन्त योगी आदित्यनाथ	500.00
40.	योग एवं महायोगी गोरखनाथ	महन्त योगी आदित्यनाथ	175.00
41.	महायोगी गुरु श्रीगोरखनाथ		40.00
42.	श्रीगोरखनाथ मन्दिर एवं गोरखपुर का इतिहास		40.00
43.	योगिराज बाबा गम्भीरनाथ		40.00
44.	युगद्रष्टा महन्त दिग्विजयनाथ		50.00
45.	राष्ट्रसन्त महन्त अवेद्यनाथ		50.00

ए.पी./जी.आर-125/14 ए.पी./29075/76

तुलसी

द्वारा कुछ घरेलू उपचार

1-जो व्यक्ति प्रतिदिन तुलसी की मात्र पाँच पत्तियों का सेवन करता है, वह अनेकानेक बीमारियों से बच सकता है।

2-प्रात:काल खाली पेट दो-तीन चम्मच तुलसी के रस का सेवन करने से शारीरिक बल एवं स्मरणशक्ति में वृद्धि साथ-साथ व्यक्तित्व भी प्रभावशाली होता है।

3-यदि तुलसी की ग्यारह पत्तियों का चार काली मिर्च के साथ सेवन किया जाय तो मलेरिया एवं मियादी बुखार आदि ठीक किये जा सकते हैं।

4- तुलसी रक्त में कोलेस्ट्रॉल की मात्रा को त्वरित नियन्त्रित करने की क्षमता रखती है।

5-शरीर के वजन को नियन्त्रित रखने हेतु भी तुलसी अत्यन्त गुणकारी है। तुलसी के नियमित सेवन से भारी व्यक्ति का वजन घटता है एवं पतले व्यक्ति का वजन बढ़ता है। तुलसी शारीरिक वजन अनुपातिक रूप से नियन्त्रित करती है।

6-तुलसी के रस की कुछ बूँदों में थोड़ा-सा नमक मिलाकर बेहोश व्यक्ति की नाक में डालने से उसे शीघ्र होश आ जाता है।

7-चाय बनाते समय कुछ पत्ती तुलसी की साथ में डाल दी जाए तो सर्दी, जुखाम एवं मांसपेशीयों के दर्द में अत्यन्त लाभ मिलता है।

8-दस ग्राम तुलसी के रस को पाँच ग्राम शहद के साथ सेवन करने से हिचकी एवं अस्थमा के रोगी को ठीक किया जा सकता है।

9-तुलसी के काढ़ें में थोड़ा-सा सेंधा नमक एवं पीसी सोंठ मिलाकर सेवन करने से कब्ज दूर होती है।

10-दोपहर भोजन के पश्चात् तुलसी की पत्तियां चबाने से पाचनशक्ति मजबूत होती है।

11-दस ग्राम तुलसी के रस के साथ पाँच ग्राम शहद एवं पाँच ग्राम पिसी काली मिर्च का सेवन करने से पाचनशक्ति की कमजोरी समाप्त हो जाती है।

12-दूषित पानी में तुलसी की कुछ ताजी पत्तियां डालने से पानी का शुद्धिकरण किया जा सकता है।

13-प्रतिदिन सुबह नहाने के साथ तुलसी की पाँच पत्तियां निगलने से कई प्रकार की संक्रामक बीमारियाँ एवं दिमाग की कमजोरी से बचा जा सकता हैं और स्मरणशक्ति को मजबूत किया जा सकता है।

14-तुलसी के रस की हल्की गरम बूँदे कान में डालने से कान के दर्द से मुक्ति पायी जा सकती है।

15-चार-पाँच भूनी हुई लौंग के साथ तुलसी की पत्ती चबाने से सभी प्रकार की खाँसी से मुक्ति पायी जा सकती है।

16-तुलसी के रस में थोड़ी शक्कर मिलाकर पीने से सीने के दर्द एवं खांसी से मुक्ति पायी जा सकती है।

17-तुलसी के रस को शरीर के चर्मरोगों से प्रभावित अंगों पर मालिश करने से दाद, एग्जिमा एवं अन्य चर्म रोगों से मुक्ति पायी जा सकती है।

18-तुलसी की पत्तियों को नींबू के साथ पीसकर पेस्ट बनाकर लगाने से एक्जिमा एवं खुजली के रोगों से मुक्ति पायी जा सकती है।

तुलसी की मुख्य विशेषता यह है कि यह पुरुषों, स्त्रियों एवं बच्चों सभी के लिये समान रूप से प्रभावशाली है और इसका कोई अन्य दुष्प्रभाव भी नहीं होता।

(डॉ० श्री विजय कुमार जी पाठक, बी०ए०एम०एस०)

प्रकाशक :
गोरखनाथ मन्दिर, गोरखपुर-२७३०१५
web: www.gorakhnathmandir.in | E-mail: gorakhnathmandir@yahoo.com
दूरभाष: (०५५१) २२५५४५३, २२५५४५४, फैक्स: ०५५१-२२५५४५५